International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 01-02-2026, Accepted: 02-03-2026, Published: 17-03-2026
Volume 12, Issue 1, 2026, Page No. 236-239

कबीर की उलटबाँसियो में एक विस्तृत दार्शनिक, साहित्यिक एवं आध्यात्मिक विवेचन

डॉ. दिनेश कुमार यादव[1], डॉ. ओम प्रकाश द्विवेदी[2], मदन मोहन पाण्डेय[3]
[1] प्रभारी प्राचार्य, भगवन बिरसा मुंडा शासकीय महाविद्यालय दिव्यगवां, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत
[2] प्राचार्य,यमुना प्रसाद शास्त्री महाविद्यालय सिरमौर, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत
[3] शोधार्थी, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश
इस शोध पत्र का विषय "कबीर की उलटबाँसियों में एक विस्तृत दार्शनिक, साहित्यिक एवं आध्यात्मिक विवेचन" कबीर की उस विशिष्ट काव्य–शैली का अध्ययन करता है जिसमें वे सामान्य तर्क और भाषा को उलट कर गूढ़ सत्य प्रकट करते हैं। उलटबाँसियाँ प्रतीकात्मक, विरोधाभासी और रहस्यमयी कथनों के माध्यम से पाठक को चौंकाती हैं और सोचने के लिए बाध्य करती हैं। दार्शनिक दृष्टि से इनमें अद्वैत भावना, माया–भ्रम, आत्मज्ञान और गुरु की महत्ता स्पष्ट होती है। साहित्यिक स्तर पर उलटबाँसियाँ कबीर की सशक्त अभिव्यक्ति, लोकभाषा की सहजता और व्यंग्यात्मक शैली को उजागर करती हैं। आध्यात्मिक रूप से ये रचनाएँ बाह्य आडंबरों, कर्मकांड और पाखंड का खंडन कर अंतर्मुखी साधना और आत्मानुभूति पर बल देती हैं। इस प्रकार कबीर की उलटबाँसियाँ न केवल बौद्धिक चुनौती प्रस्तुत करती हैं, बल्कि साधक को आत्मिक सत्य की ओर उन्मुख भी करती हैं।

मूल शब्दः कबीर, उलटबाँसिया, नाथ पंथ, 'संध्या भाषा, ज्ञान की आंधी, भ्रम की टटी

प्रस्तावना: विरोधाभास का आध्यात्मिक स्थापत्य

भारतीय मध्यकालीन भक्ति आंदोलन के गगन में संत कबीर दास एक ऐसे नक्षत्र हैं, जिनका प्रकाश सदियों बाद भी धूमिल नहीं हुआ है। वे केवल एक कवि या समाज सुधारक नहीं थे, बल्कि एक ऐसे दृष्टा थे जिन्होंने सत्य को नग्न आँखों से देखा और उसे उसी निर्भीकता से व्यक्त किया। कबीर का साहित्य जितना सरल प्रतीत होता है, उसकी गहराई उतनी ही अथाह है। उनकी रचनाओं में 'उलटबाँसी' शैली का प्रयोग एक ऐसी विशिष्ट विधा है, जो पाठक या श्रोता के तर्क को ध्वस्त करके उसे सीधे अनुभवात्मक सत्य के धरातल पर ला खड़ा करती है। यह प्रतिवेदन कबीर की उलटबाँसियों, दोहों और चौपाइयों का एक विस्तृत, गहन और सूक्ष्म विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

उलटबाँसी का शाब्दिक अर्थ है "उल्टी वाणी" या "विपरीत कथन"। यह वह उक्ति है जो अपने वाच्यार्थ में सामान्य लोक–अनुभव और प्राकृतिक नियमों के विपरीत प्रतीत होती है, किंतु अपने व्यंग्यार्थ या लक्ष्यार्थ में गहरे आध्यात्मिक सत्य को उद्घाटित करती है । जब कबीर कहते हैं कि "समुद्र में आग लग गई" या "चींटी के पैर में हाथी बँधा है", तो वे किसी पागलपन का प्रदर्शन नहीं कर रहे, बल्कि उस परम चेतना की ओर इशारा कर रहे हैं जहाँ भौतिक जगत के नियम निरस्त हो जाते हैं।

इस शोध प्रतिवेदन का उद्देश्य कबीर की इस रहस्यमयी भाषा–शैली के ऐतिहासिक स्रोतों, दार्शनिक आधारों और प्रतीकात्मक अर्थों को समग्रता में समझना है। हम देखेंगे कि किस प्रकार कबीर ने 'संध्या भाषा' की परंपरा को अपनाकर उसे भक्ति और ज्ञान का एक सशक्त माध्यम बना दिया। यह विश्लेषण सिद्ध करेगा कि उलटबाँसी केवल चमत्कार प्रदर्शन नहीं, बल्कि 'मानस' को विखंडित कर 'सुरति' को जगाने की एक सुव्यवस्थित आध्यात्मिक तकनीक है ।

ऐतिहासिक एवं दार्शनिक पृष्ठभूमि

कबीर की उलटबाँसियाँ शून्य में उत्पन्न नहीं हुईं। इनके पीछे एक सुदीर्घ दार्शनिक और योगिक परंपरा है, जो वेदों से लेकर सिद्धों और नाथों तक फैली हुई है। इस पृष्ठभूमि को समझे बिना कबीर के प्रतीकों का कूट–विच्छेदन असंभव है।

1. वैदिक और औपनिषदिक जड़ें

यद्यपि उलटबाँसी का पूर्ण विकसित रूप मध्यकाल में मिलता है, तथापि इसके बीज ऋग्वेद की ऋचाओं में भी देखे जा सकते हैं। वेदों में अग्नि और सोम के वर्णन में अक्सर विरोधाभासी रूपकों का प्रयोग हुआ है। उदाहरण के लिए, अग्नि को एक ऐसे बालक के रूप में वर्णित किया गया है जो पैदा होते ही अपनी माताओं (लकड़ियों) को खा जाता है। यह प्रतीकात्मकता कबीर के यहाँ "पूतलें महतारी को खाया" (पुत्र ने माता को खा लिया) के रूप में पुनर्जीवित होती है । उपनिषदों में 'अश्वत्थ' वृक्ष का वर्णन मिलता है जिसकी जड़ें ऊपर और शाखाएं नीचे हैं (ऊर्ध्वमूलम/शाखम्), जो कबीर के "ऊपर मूल, पाताल शाखा" वाले उलटबाँसी का सीधा पूर्वज है ।

2. नाथ पंथ और 'संध्या भाषा'

कबीर की उलटबाँसियों का सबसे निकटतम संबंध सिद्धों और नाथ योगियों (विशेषकर गोरखनाथ) की परंपरा से है। बौद्ध सिद्धों ने अपनी साधना पद्धतियों को गोपनीय रखने के लिए एक विशेष कूट भाषा का प्रयोग किया, जिसे 'संध्या भाषा' या 'संधा भाषा' कहा गया । यह भाषा "प्रकाश और अंधकार" के मिलन बिंदु पर स्थित थी जिसका एक अर्थ बाहरी दुनिया के लिए था (अक्सर अटपटा या अश्लील) और दूसरा अर्थ साधक के लिए था (गहरा योगिक सत्य)।

नाथ पंथी योगियों ने हठयोग की क्रियाओं को समझाने के लिए इसका प्रयोग किया। हठयोग में 'उल्टा' का सिद्धांत केंद्रीय है। सामान्यतः प्राण ऊर्जा और वीर्य नीचे की ओर (भोग की ओर) प्रवाहित होते हैं। योगी का लक्ष्य इस प्रवाह को उलटकर ऊपर की ओर (सहस्रार चक्र की ओर) ले जाना है। इसे 'उल्टा साधना' कहते हैं। कबीर ने इस शारीरिक/प्राणिक उलटाव को भाषाई और चेतनात्मक उलटाव में बदल दिया। जब कबीर कहते हैं "गंगा उल्टी बही" (गंगा उल्टी बहने लगी), तो वे इसी आंतरिक ऊर्जा के ऊर्ध्वगमन की बात कर रहे होते हैं ।

3. सूफी रहस्यवाद का प्रभाव

कबीर पर सूफी प्रेम–साधना का भी गहरा प्रभाव था। अमीर खुसरो जैसे सूफी कवियों ने भी विरोधाभासी पहेलियों का प्रयोग

किया था "खुसरो दरिया प्रेम का, उल्टी वा की धार"। कबीर ने भारतीय अद्वैतवाद और सूफी 'फना' (अहंकार का नाश) को मिलाकर एक ऐसी भाषा रची जो दोनों परंपराओं के रूढ़िवाद पर प्रहार करती थी।

उलटबाँसी का तत्त्वमीमांसा : 'उल्टा' ही 'सीधा' है

कबीर की उलटबाँसियों के मूल में यह दार्शनिक मान्यता है कि संसार (संसार) स्वयं में एक 'उल्टा' सत्य है। जो हमें 'सीधा' लगता है जैसे जन्म, मृत्यु, सुख, दुख—वह आध्यात्मिक दृष्टि से भ्रम है। अतः, सत्य को व्यक्त करने के लिए भाषा को 'उल्टा' करना अनिवार्य हो जाता है।

1. बासी और अमृत की अवधारणा:–

शोध सामग्री एक अत्यंत मौलिक व्याख्या प्रस्तुत करती है। 'उलटबाँसी' शब्द का विश्लेषण करते हुए यह तर्क दिया गया है कि 'बासी' का अर्थ है बासी भोजन या मृत। संसार 'बासी' है क्योंकि यह पुनरावृत्ति और मृत्यु के चक्र में फँसा है। कबीर की वाणी 'उलट–बासी' है, अर्थात वह जो 'बासी' का उल्टा है यानी 'ताजा', 'जीवंत' और 'अमृत'। इस प्रकार, उलटबाँसी मृत्युलोक की भाषा नहीं, बल्कि अमरलोक की भाषा है। यह उस आयाम से आती है जहाँ समय और स्थान के नियम लागू नहीं होते।

2. ज्ञान की आंधी और भ्रम की टटी:–

कबीर के दर्शन में अज्ञान एक आवरण है। उलटबाँसी इस आवरण को छिन्न–भिन्न करने वाली 'ज्ञान की आंधी' है। जैसे आंधी आने पर झोपड़ी (भ्रम) उड़ जाती है, वैसे ही उलटबाँसी को सुनकर तार्किक मन का ढांचा बिखर जाता है। यह पाठक को एक 'शून्य' में धकेल देती है, जहाँ उसे नए सिरे से अर्थ की खोज करनी पड़ती है। यह प्रक्रिया ही साधना है ।

3. व्यष्टि और समष्टि का विपर्यय:–

कबीर बार–बार छोटे को बड़ा और बड़े को छोटा बताते हैं। चींटी हाथी को खा जाती है, समुद्र बूंद में समा जाता है। यह केवल काव्य–चमत्कार नहीं है, बल्कि अद्वैत वेदांत का यह सिद्धांत है कि आत्मा (जो अणु समान सूक्ष्म है) ब्रह्म (जो विभु और महान है) से अभिन्न है। जब कबीर कहते हैं कि "चींटी के पेट में हाथी समा गया", तो वे कह रहे हैं कि सूक्ष्म आत्म–ज्ञान के भीतर यह विशाल ब्रह्मांड और अहंकार विलीन हो जाता है ।

4. प्रमुख प्रतीकों का शब्दकोश:–

कबीर की उलटबाँसियों में प्रयुक्त प्रतीक यादृच्छिक नहीं हैं। वे एक सुसंगत पारिभाषिक शब्दावली का निर्माण करते हैं। इन प्रतीकों का विस्तृत विवेचन नीचे दी गई तालिका और विश्लेषण में प्रस्तुत है:

तालिका 1: कबीर के उलटबाँसी प्रतीकों का अर्थ–

क्र	प्रतीक	सामान्यअर्थ	आध्यात्मिक/प्रतीकात्मक अर्थ	संदर्भ/टिप्पणी
1	हाथी	विशाल जानवर	अहंकार, अभिमान, स्थूल मन, कर्म का पहाड़	"चींटी के पग हस्ती बाँधा"
2	चींटी	क्षुद्र जीव	विनम्रता, सूक्ष्म विवेक, जीवात्मा, कुंडलिनी शक्ति	"चींटी के मुख हस्ती समाय "
3	सिंह/नाहर	हिंसक पशु	काल (मृत्यु), अज्ञान, माया, या कभी–कभी गुरु/ज्ञान	"नाहर खाइयो हरिन"
4	गाय	निरीह पशु	इंद्रियाँ, सहज वृत्ति, जीवात्मा	"बाघिन घेरी गाय "
5	समुद्र	जल राशि	संसार, भवसागर, शरीर (विषयों से भरा हुआ)	"समंदर लागी आगि"
6	आग	दहनकारी तत्व	ज्ञान, विरह, ब्रह्म–ज्ञान, तृष्णा (संदर्भानुसार)	"नदियाँ जलि कोयला भई"
7	मछली	जलचर	जीवात्मा जो संसार रूपी जल में फँसी है	"मंछी रूषां चढ़ि गईं"
8	वृक्ष	पेड़	शरीर, मेरुदंड, या शाश्वत सत्य (अविनाशी पद)	"तरवर एक मूल बिन ठाढ़ा"
9	ससा (खरगोश)	डरपोक जीव	साधक, जीवात्मा जो अब शिकारी बन गया है	"ससा मारी सर"
10	कंबल	ओढ़ने का वस्त्र	माया का आवरण, या गुरु की कृपा (संदर्भानुसार)	"बरसे कंबल भीजे पानी"

1. पशु जगत का प्रतीकार्थ –

कबीर के "चिड़ियाघर" में जानवर अपनी प्राकृतिक प्रवृत्ति के विपरीत व्यवहार करते हैं।

- **चींटी और हाथी:** हाथी अहंकार का प्रतीक है विशाल, मदमस्त और भारी। चींटी विनम्रता और सूक्ष्म विवेक का प्रतीक है। कबीर कहते हैं कि विवेक रूपी चींटी ने अहंकार रूपी हाथी को निगल लिया। यह शक्ति के पिरामिड का उलटाव है आध्यात्मिक जगत में विनम्रता ही सबसे बड़ी शक्ति है ।

- **सिंह और गाय:** गाय (इंद्रियाँ/जीव) सामान्यतः सिंह (काल/माया) का शिकार होती है। लेकिन कबीर की दुनिया में, "गाय ने सिंह को घेर लिया" या "गाय सिंह को चरा रही है"। इसका अर्थ है कि जाग्रत चेतना (गाय) ने अब काल और माया (सिंह) को अपने वश में कर लिया है। साधक अब मृत्यु से नहीं डरता, बल्कि मृत्यु उसकी सेवा करती है।

2. प्रकृति के तत्वों का विपर्यय:–

- **जल और अग्नि:** "पानी में आग लगना" कबीर का प्रिय रूपक है। पानी (संसार/शरीर) ठंडी और जड़ प्रकृति का है। जब इसमें "ज्ञान की आग" लगती है, तो विषय–वासना रूपी नदियाँ जलकर कोयला (राख) हो जाती हैं। यह असंभव घटना 'संभव' हो जाती है जब गुरु की कृपा होती है ।

- **बरसे कंबल भीजे पानी:** सामान्यतः पानी बरसता है और कंबल भीगता है। यहाँ कंबल (माया या आकाश) बरस रहा है और पानी (जीव) भीग रहा है। इसका एक अर्थ यह भी है कि 'कंबल' (शून्य/आकाश) से अमृत की वर्षा हो रही है और 'पानी' (जीव) उसमें सराबोर हो रहा है ।

प्रमुख उलटबाँसियों की विस्तृत व्याख्या (Detailed Euegesis)

इस खंड में हम कबीर की सर्वाधिक प्रसिद्ध और गूढ़ उलटबाँसियों का पंक्ति–दर–पंक्ति विश्लेषण करेंगे।

1. "एक अचंभा देखा रे भाई"

मूल पद (आंशिक):–
एक अचंभा देखा रे भाई, ठाढ़ा सिंह चरावे गाई।
पहले पूत पीछे भई माई, चेला के गुरु लागै पाई।।

व्याख्या

1. ठाढ़ा सिंह चरावे गाई: यहाँ सिंह (ज्ञान/विवेक) खड़ा होकर गायों (इंद्रियों) को चरा रहा है। सामान्य अवस्था में इंद्रियाँ मनमाने ढंग से भागती हैं, लेकिन ज्ञानी के भीतर विवेक उनका रक्षक और निर्देशक बन जाता है।

2. पहले पूत पीछे भई माई: 'पूत' (पुत्र) जीवात्मा या ब्रह्म है, और 'माई' (माता) माया या प्रकृति है। तात्विक दृष्टि से, ब्रह्म अनादि है और माया का उद्भव ब्रह्म के आश्रय में बाद में होता है।

इसलिए, पुत्र (ब्रह्म) माता (माया) से जेठा (बड़ा/पहला) है। यह सृष्टि–क्रम का आध्यात्मिक संशोधन है ।

3. चेला के गुरु लागै पाई: व्यावहारिक जगत में चेला गुरु के पैर पड़ता है। लेकिन यहाँ 'गुरु' (ज्ञान/सिद्धांत) श्चेलेश (अनुभव/साधक) के पैरों में लगता है। इसका अर्थ है कि जब साधक पूर्णत्व को प्राप्त होता है, तो ज्ञान भी उसके अनुभव के सामने छोटा पड़ जाता है। अथवा, गुरु अपने शिष्य की उपलब्धि देखकर नतमस्तक है। यह द्वैत के मिटने की स्थिति है।

2. "समंदर लागी आगि" मूल पद:
समंदर लागी आगि, नदियाँ जलि कोयला भई।
देखि कबीरा जागि, मंछी रूषां चढ़ि गईं।।

व्याख्या:

1. **समंदर लागी आगि:** शरीर या संसार रूपी समुद्र में ज्ञान या विरह की अग्नि प्रज्वलित हो गई है। इसे 'बड़वानल' भी कहा जा सकता है जो जल के भीतर लगती है।
2. **नदियाँ जलि कोयला भई:** नदियाँ (वासनाएँ/इच्छाएँ) जो निरंतर बहती रहती थीं, ज्ञान की अग्नि में जलकर समाप्त (कोयला) हो गईं। जल का जलना असंभव है, पर कबीर यहाँ 'विषय–जल' की बात कर रहे हैं।
3. **मंछी रूषां चढ़ि गईं:** मछली (जीवात्मा) जो जल (संसार) के बिना नहीं रह सकती थी, वह अब जल के सूखने/जलने पर 'रूषां' (वृक्ष) पर चढ़ गई है। वृक्ष यहाँ 'मेरुदंड' या 'सहस्रार' का प्रतीक है। अर्थात, जीवात्मा ने मूलाधार (जल) को त्यागकर ऊर्ध्वगामी होकर सहस्रार (वृक्ष) में शरण ले ली है।

3. "अवधू सो जोगी गुरु मेरा" (बिना जड़ का पेड़)
मूल पद:
तरवर एक मूल बिन ठाढ़ा, बिन फूला फल लागा।
साखा पत्र कछु नहिं वाकै, पदम पंखिया पागा।।
व्याख्या: यह पद 'कारण–कार्य' (Cause and Effect) के सिद्धांत को चुनौती देता है।
1. मूल बिन ठाढ़ा: वह वृक्ष (परम सत्य या अस्तित्व) बिना जड़ (कारण) के खड़ा है। ईश्वर स्वयंभू है, उसका कोई कारण नहीं है।

2. बिन फूला फल लागा: सामान्यतः फूल (साधनाध्कर्म) के बाद फल (मोक्ष) आता है। कबीर कहते हैं कि सहजानुभूति में फल प्राप्ति के लिए कर्मकांड रूपी फूलों की आवश्यकता नहीं है। यह 'अहेतुक कृपा' है।

3. पदम पंखिया: यह सहस्रार कमल की ओर संकेत है जहाँ बिना शाखा–पत्र के भी आनंद का अनुभव होता है।

4. "चींटी के पग हस्ती बाँधा"
मूल पद:
चींटी के पग हस्ती बाँधा, जकरी गगन को जाया।
व्याख्या: यहाँ 'चींटी' वह सूक्ष्म विवेक या नाम–स्मरण है जिसने 'हस्ती' (मन/अहंकार) को बाँध लिया है। इतना ही नहीं, वह उस विशाल अहंकार को लेकर 'गगन' (चिदाकाश/शून्य) में उड़ गई है। यह शक्ति का रूपांतरण है स्थूल पर सूक्ष्म की विजय।

बीजक:–
रमैनी, सबद और साखी में उलटबाँसी का स्वरूप
कबीर पंथ का प्रमुख ग्रंथ 'बीजक' उलटबाँसियों का कोषागार है। इसके तीनों भागों में उलटबाँसी का प्रयोग अलग–अलग उद्देश्यों से हुआ है ।

1. रमैनी:–
ब्रह्मांडीय उलटफेर
रमैनी मुख्यतः दोहा और चौपाई छंद में रचित हैं। इनमें कबीर सृष्टि के रहस्यों और माया के प्रपंच का वर्णन करते हैं।

- **रमैनी 5:** इसमें कबीर सृष्टि उत्पत्ति का वर्णन करते हुए कहते हैं कि कैसे 'एक' से 'अनेक' का विस्तार हुआ, और कैसे जीव माया के जाल में फँसकर अपनी वास्तविकता भूल गया। यहाँ वे वेदों और कुरान की मान्यताओं को चुनौती देते हैं और कहते हैं कि "पंडित भूले पढ़ि गुनि वेदा" (पंडित वेदों को पढ़कर भटक गए हैं) ।

- **रमैनी 76:** इसमें माया के 'महाठगिनी' रूप का वर्णन है। "माया मोह सकल संसारा" यहाँ कबीर बताते हैं कि कैसे पूरा संसार एक भ्रम (Illusion) में जी रहा है, जो कि वास्तविकता का ठीक 'उल्टा' है ।

2. सबद (Sabda): लयात्मक विरोधाभास
सबद (पद) गेय रचनाएँ हैं। इनमें उलटबाँसी का प्रयोग भावात्मक और रहस्यवादी अनुभूतियों को व्यक्त करने के लिए हुआ है।

- **उदाहरण:** "साधो, देखो जग बौराना" (साधु, देखो जग पागल हो गया है)। यहाँ कबीर सामाजिक उलटबाँसी का प्रयोग करते हैं "साच कहौं तो मारन धावै, झूठे जग पतियाना" (सच कहो तो मारने दौड़ते हैं, झूठ पर विश्वास करते हैं)। यह नैतिक मूल्यों का व्युत्क्रमण (Inversion) है ।

3. साखी (Sakhi): प्रत्यक्ष ज्ञान की साक्षी
साखी (दोहे) में कबीर का स्वर अधिक तीखा और उपदेशात्मक होता है। यहाँ उलटबाँसी का प्रयोग अक्सर सामाजिक प्रहार या नीति उपदेश के लिए किया गया है।

- **दोहा**

"कबिरा खड़ा बाजार में, लिए लुकाठी हाथ।
जो घर जारै अपना, चलै हमारे साथ।।"

- **विश्लेषण:** यह एक व्यवहारिक उलटबाँसी है। कोई भी व्यक्ति अपना घर (सुरक्षा/अहंकार) जलाकर गुरु के साथ नहीं जाना चाहेगा। लेकिन कबीर कहते हैं कि आध्यात्मिक मार्ग पर चलने की पहली शर्त ही 'घर जलाना' (मोह–त्याग) है।

उलटबाँसियों के सामाजिक और मनोवैज्ञानिक आयाम
कबीर की उलटबाँसियाँ केवल आध्यात्मिक पहेलियाँ नहीं हैं; वे एक सामाजिक अस्त्र भी हैं।

1. सामाजिक पदानुक्रम का विध्वंस
मध्यकालीन भारत जाति और वर्ण के कठोर नियमों में जकड़ा हुआ था। कबीर, जो एक जुलाहे थे, ने अपनी उलटबाँसियों के माध्यम से ब्राह्मणवादी वर्चस्व को चुनौती दी।

- **उदाहरण:** "तू बाम्हन मैं काशी का जुलाहा, बूझहु मोर गियाना" (तू ब्राह्मण है, मैं जुलाहा हूँ, लेकिन मेरे ज्ञान को समझ)।
- कबीर ने 'पंडित' की परिभाषा ही उलट दी "पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय। ढाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय"। यहाँ साक्षरता और पांडित्य का संबंध विच्छेद कर दिया गया है। जो तथाकथित 'ज्ञानी' हैं वे वास्तव में 'मूर्ख' हैं, और जो 'निरक्षर' प्रेमी हैं, वे ही असली ज्ञानी हैं।

2. मनोवैज्ञानिक 'शॉक थेरेपी'
विद्वान लिंडा हेस और हजारी प्रसाद द्विवेदी मानते हैं कि उलटबाँसी का उद्देश्य श्रोता को "मूर्ख महसूस कराना" है । जब

मन किसी पहेली को सुलझाने में असमर्थ हो जाता है, तो वह 'हथियार डाल देता है'। तार्किक मन का यह समर्पण ही वह क्षण है जब अंतर्ज्ञान का द्वार खुलता है। यह एक प्रकार की "डी–कंडीशनिंग" है जो समाज और भाषा द्वारा थोपे गए अर्थों को धो डालती है।

3. 'ठग' और 'साधु' का विरोधाभास

कबीर अक्सर भगवान को 'ठग' कहते हैं और खुद को 'ठगा जाना' पसंद करते हैं।

- **दोहा:**

"कबिरा आप ठगाइए, और न ठगिए कोय।
आप ठगे सुख होत हैं, और ठगे दुख होय।।"

यह लोक–व्यवहार के विपरीत है। दुनिया में 'ठगना' (जीतना) सफलता मानी जाती है। कबीर कहते हैं कि 'हारना' (ठगा जाना) असली जीत है, क्योंकि इसमें चित्त की शांति और निर्दोषता बची रहती है।

कबीर के अन्य दोहे और चौपाइयों में अंतर्निहित उलटबाँसी

कबीर के सामान्य दोहों में भी सूक्ष्म उलटबाँसी छिपी होती है जो पहली नजर में नहीं दिखती।

1. "निंदक नियरे राखिए"

निंदक नियरे राखिए, आँगन कुटी छवाय।
बिन पानी साबुन बिना, निर्मल करे सुभाय।।

विरोधाभास: हम निंदक (आलोचक) से दूर भागते हैं। कबीर उसे 'आँगन' (सर्वाधिक निजी स्थान) में रखने की सलाह देते हैं। क्यों? क्योंकि निंदक वह 'धोबी' है जो बिना पैसे और संसाधन (साबुन–पानी) के हमारे चरित्र को साफ कर देता है। यह शत्रु को मित्र के रूप में देखने की अद्भुत दृष्टि है।

2. "सुख में सुमिरन सब करे"

दुख में सुमिरन सब करे, सुख में करै न कोय।
जो सुख में सुमिरन करे, तो दुख काहे को होय।।

विरोधाभास: यहाँ विरोधाभास मानव स्वभाव में है। कबीर उस विरोधाभास को उजागर करते हैं कि हम 'निवारण' तो चाहते हैं पर 'परहेज' नहीं। यह एक मनोवैज्ञानिक उलटबाँसी है जो मनुष्य की अवसरवादिता पर व्यंग्य करती है।

3. "काल करे सो आज कर"

काल करे सो आज कर, आज करे सो अब।
पल में परलय होएगी, बहुरि करेगा कब।।

विरोधाभास: सामान्य मनुष्य भविष्य (काल) के भरोसे जीता है। कबीर समय को 'उल्टा' करके 'वर्तमान' (Now) में लाते हैं। प्रलय (मृत्यु) भविष्य की घटना नहीं, बल्कि 'पल' (क्षण) की संभावना है।

निष्कर्ष

सीधा रास्ता 'उल्टा' होकर ही मिलता है,कबीर की उलटबाँसियों, दोहों और चौपाइयों का यह विस्तृत विश्लेषण हमें इस निष्कर्ष पर पहुँचाता है कि कबीर की 'उल्टी बानी' वास्तव में सत्य का 'सीधा' साक्षात्कार है। संसार, अपने अज्ञान और अहंकार के कारण, सत्य को उल्टा देखता है जैसे दर्पण में प्रतिबिंब उल्टा दिखाई देता है। कबीर उस दर्पण को तोड़कर बिंब (मूल) को दिखाना चाहते हैं।

इन रचनाओं के माध्यम से कबीर ने:

1. भाषा को नया आयाम दिया:– शब्दों को उनके रूढ़ अर्थों से मुक्त किया।
2. तर्क को चुनौती दी:– बुद्धि के अहंकार को तोड़कर अनुभव का मार्ग प्रशस्त किया।
3. समाज को आईना दिखाया:– ऊंच–नीच और पाखंड की मान्यताओं को सिर के बल खड़ा कर दिया।

कबीर की उलटबाँसी उस 'पारस' पत्थर के समान है जो लोहे (कठोर मन) को छूकर उसे सोना (शुद्ध चेतना) बना देती है। "समझै तो सब कुछ है, न समझै तो कुछ भी नहीं।" जो इस उलटबाँसी को समझ लेता है, उसके लिए "धरती उलटि अकासै जाय" (धरती आकाश में मिल जाती है) अर्थात भौतिकता आध्यात्मिकता में विलीन हो जाती है। अंततः, कबीर का संदेश यही है कि बाहर की दुनिया में भटकने (मृग की तरह कस्तूरी ढूँढने) के बजाय, अपने भीतर की 'उल्टी' यात्रा शुरू करो, जहाँ "घट ही में साहिब" विराजमान है ।

परिशिष्ट1:– तुलनात्मक सारणी

क्र	विषय	लोक दृष्टि	कबीर की उलट दृष्टि
1	मृत्यु	भय का कारण, अंत	आनंद, "जिस मरने से जग डरे, मेरे मन आनंद"
2	ज्ञान	पोथी–पुराण, साक्षरता	प्रेम, अनुभव, "ढाई आखर प्रेम का"
3	शक्ति	हाथी (अहंकार), बल	चींटी (विनम्रता), "चींटी के पग हस्ती बाँधा"
4	शत्रु	निंदक, जिससे दूर रहना चाहिए	हितेषी, "निंदक नियरे राखिए"
5	सफलता	दूसरों को जीतनाध्ठगना	स्वयं को हारना/ठगा जाना, "कबिरा आप ठगाइए "

कबीर की यह वाणी आज भी उतनी ही प्रासंगिक है, क्योंकि मनुष्य आज भी उसी 'उल्टे' संसार में जी रहा है जहाँ पदार्थों का मूल्य आत्मा से अधिक है। कबीर की उलटबाँसी हमें पुनः 'सीधा' होने का निमंत्रण देती है।

संदर्भ स्रोत:–

- कबीर की उलटबाँसी रचनाओं का क्या तात्पर्य है? – क्वोरा, https://hi.quora.com
1. कबीर ने उलटबांसिया या विपर्यय क्यों कहे?
2. अखण्ड ज्योति (अक्तूबर 1984), कबीर की उलटबांसियाँ[6]।
3. श्री गुरु ग्रंथ साहिब (पंजाबी), गुरु अर्जन देव (1521–1606) द्वारा संकलित।
4. संत कबीर दस के दोहे ,
5. चौहान, शैलेंद्र. वैज्ञानिक चेतना और साहित्य, समता मार्ग (जून 2022)[12][13]।
6. कबीर के उलटबासी Chhattisgarh Mitra, https://chhattisgarhmitra.com/?p=1336
7. कबीर के शब्द और उलटबांसियाँ, अभिव्यक्ति का समालोचनात्मक अध्ययन – - Jetir.Org, https://www.jetir.org/papers/JETIR2504328.pdf
8. संत कबीर की उलटबांसियां"कबीर का उल्टा ज्ञान"
9. कबीर की उलटबांसियां – कबीर की उलटबांसियां - Version 2 - December, https://www.awgp.org/en/literature/akhandjyoti/1984/December/v2.18
10. क्या है कबीर की उलटबाँसियों का रहस्य ?
11. रमैनी और बीजक – विकिपीडिया, https://hi.wikipedia.org
12. बीजक - Wikipedia, https://en.wikipedia.org/wiki/Bijak